॥श्रीहरिः॥

LEARN GEETA
तस्मात् योगी भवार्जुन

Ver 7.0
सप्तम संस्करण

॥ विद्या धर्मेण शोभते ॥
गीता परिवार
॥ गीता पढ़ें, पढ़ायें, जीवन में लायें ॥

गीता परिवार द्वारा श्रीमद्भगवद्गीता का शुद्ध उच्चारण सीखने हेतु अनुस्वार, विसर्ग एवं आघात प्रयोग सहित, चरणानुसार विभाग, मूल संहिता पाठ के अनुकूल

श्रीमद्भगवद्गीता

सप्तम (7वाँ) अध्याय

ज्ञानविज्ञानयोग

- लर्नगीता एप्प : app.learngeeta.com
- नया पंजीकरण : Joingeeta.com
- अभ्यास सामग्री : practice.learngeeta.com
- विवेचन सुनें : vivechan.learngeeta.com
- परीक्षा पंजीकरण : exam.learngeeta.com
- YouTube : youtube.com/c/GeetaPariwar
- Instagram : instagram.com/geetaparivar
- साधक पोर्टल : online.learngeeta.com
- पुस्तक क्रय : store.learngeeta.com
- प्रचार सामग्री : learngeeta.com/pracharak
- गीतासेवी बनें : sewa.learngeeta.com
- गीता कक्षा उपहार : gift.learngeeta.com
- Facebook : facebook.com/geetaparivar
- Twitter : x.com/Learn_Geeta

वसुदेवसुतं(न्) देवं(ङ्), कंसचाणूरमर्दनम्।
देवकीपरमानन्दं(ङ्), कृष्णं(वँ) वन्दे जगद्गुरुम्॥

ॐ

Ver 7.0
सप्तम संस्करण

श्रीपरमात्मने नमः

श्रीमद्भगवद्गीता

अथ सप्तमोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

मय्यासक्तमनाः(फ्) पार्थ, योगं(यँ) युञ्जन्मदाश्रयः।
असंशयं(म्) समग्रं(म्) मां(यँ), यथा ज्ञास्यसि तच्छृणु॥1॥

ज्ञानं(न्) तेऽहं(म्) सविज्ञानम्, इदं(वँ) वक्ष्याम्यशेषतः।
यज्ज्ञात्वा नेह भूयोऽन्यज्, ज्ञातव्यमवशिष्यते॥2॥

मनुष्याणां(म्) सहस्रेषु, कश्चिद्यतति सिद्धये।
यततामपि सिद्धानां(ङ्), कश्चिन्मां(वँ) वेत्ति तत्त्वतः॥3॥

भूमिरापोऽनलो वायुः(ख्), खं(म्) मनो बुद्धिरेव च।
अहङ्कार इतीयं(म्) मे, भिन्ना प्रकृतिरष्टधा॥4॥

अपरेयमितस्त्वन्यां(म्), प्रकृतिं(वँ) विद्धि मे पराम्।
जीवभूतां(म्) महाबाहो, ययेदं(न्) धार्यते जगत्॥5॥

एतद्योनीनि भूतानि, सर्वाणीत्युपधारय।
अहं(ङ्) कृत्स्नस्य जगतः(फ्), प्रभवः(फ्) प्रलयस्तथा॥6॥

मत्तः(फ्) परतरं(न्) नान्यत्, किञ्चिदस्ति धनञ्जय।
मयि सर्वमिदं(म्) प्रोतं(म्), सूत्रे मणिगणा इव॥7॥

रसोऽहमप्सु कौन्तेय, प्रभास्मि शशिसूर्ययोः।
प्रणवः(स्) सर्ववेदेषु, शब्दः(ख्) खे पौरुषं(न्) नृषु॥8॥

Learngeeta.com
LEARN GEETA

पुण्यो गन्धः(फ्) पृथिव्यां(ञ्) च, तेजश्चास्मि विभावसौ।
जीवनं(म्) सर्वभूतेषु, तपश्चास्मि तपस्विषु॥9॥

बीजं(म्) मां(म्) सर्वभूतानां(वँ), विद्धि पार्थ सनातनम्।
बुद्धिर्बुद्धिमतामस्मि, तेजस्तेजस्विनामहम्॥10॥

बलं(म्) बलवतां(ञ्) चाहं(ङ्), कामरागविवर्जितम्।
धर्माविरुद्धो भूतेषु, कामोऽस्मि भरतर्षभ॥11॥

ये चैव सात्त्विका भावा, राजसास्तामसाश्च ये।
मत्त एवेति तान्विद्धि, न त्वहं(न्) तेषु ते मयि॥12॥

त्रिभिर्गुणमयैर्भावैः(र्), एभिः(स्) सर्वमिदं(ञ्) जगत्।
मोहितं(न्) नाभिजानाति, मामेभ्यः(फ्) परमव्ययम्॥13॥

दैवी ह्येषा गुणमयी, मम माया दुरत्यया।
मामेव ये प्रपद्यन्ते, मायामेतां(न्) तरन्ति ते॥14॥

न मां(न्) दुष्कृतिनो मूढाः(फ्), प्रपद्यन्ते नराधमाः।
माययापहृतज्ञाना, आसुरं(म्) भावमाश्रिताः॥15॥

चतुर्विधा भजन्ते मां(ञ्), जनाः(स्) सुकृतिनोऽर्जुन।
आर्तो जिज्ञासुरर्थार्थी, ज्ञानी च भरतर्षभ॥16॥

तेषां(ञ्) ज्ञानी नित्ययुक्त, एकभक्तिर्विशिष्यते।
प्रियो हि ज्ञानिनोऽत्यर्थम्, अहं(म्) स च मम प्रियः॥17॥

उदाराः(स्) सर्व एवैते, ज्ञानी त्वात्मैव मे मतम्।
आस्थितः(स्) स हि युक्तात्मा, मामेवानुत्तमां(ङ्) गतिम्॥18॥

Learngeeta.com

LEARN GEETA

बहूनां(ञ्) जन्मनामन्ते, ज्ञानवान्मां(म्) प्रपद्यते।
वासुदेवः(स्) सर्वमिति, स महात्मा सुदुर्लभः॥19॥

कामैस्तैस्तैर्हृतज्ञानाः(फ्), प्रपद्यन्तेऽन्यदेवताः।
तं(न्) तं(न्) नियममास्थाय, प्रकृत्या नियताः(स्) स्वया॥20॥

यो यो यां(यँ) यां(न्) तनुं(म्) भक्तः(श्), श्रद्धयार्चितुमिच्छति।
तस्य तस्याचलां(म्) श्रद्धां(न्), तामेव विदधाम्यहम्॥21॥

स तया श्रद्धया युक्तः(स्), तस्याराधनमीहते।
लभते च ततः(ख्) कामान्, मयैव विहितान्हि तान्॥22॥

अन्तवत्तु फलं(न्) तेषां(न्), तद्भवत्यल्पमेधसाम्।
देवान्देवयजो यान्ति, मद्भक्ता यान्ति मामपि॥23॥

अव्यक्तं(वँ) व्यक्तिमापन्नं(म्), मन्यन्ते मामबुद्धयः।
परं(म्) भावमजानन्तो, ममाव्ययमनुत्तमम्॥24॥

नाहं(म्) प्रकाशः(स्) सर्वस्य, योगमायासमावृतः।
मूढोऽयं(न्) नाभिजानाति, लोको मामजमव्ययम्॥25॥

वेदाहं(म्) समतीतानि, वर्तमानानि चार्जुन।
भविष्याणि च भूतानि, मां(न्) तु वेद न कश्चन॥26॥

इच्छाद्वेषसमुत्थेन, द्वन्द्वमोहेन भारत।
सर्वभूतानि सम्मोहं(म्), सर्गे यान्ति परन्तप॥27॥

येषां(न्) त्वन्तगतं(म्) पापं(ञ्), जनानां(म्) पुण्यकर्मणाम्।
ते द्वन्द्वमोहनिर्मुक्ता, भजन्ते मां(न्) दृढव्रताः॥28॥

Learngeeta.com

LEARN GEETA

जरामरणमोक्षाय, मामाश्रित्य यतन्ति ये।
ते ब्रह्म तद्विदुः(ख्) कृत्स्नम्, अध्यात्मं(ङ्) कर्म चाखिलम्॥29॥

साधिभूताधिदैवं(म्) मां(म्), साधियज्ञं(ञ्) च ये विदुः।
प्रयाणकालेऽपि च मां(न्), ते विदुर्युक्तचेतसः॥30॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासु उपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां(यँ) योगशास्त्रे
श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ज्ञानविज्ञानयोगो नाम सप्तमोऽध्यायः॥

॥ॐ श्रीकृष्णार्पणमस्तु॥

Learngeeta.com

LEARN GEETA

Ver 7.0
सप्तम संस्करण

स्तर 3 उच्चारण नियमावली

- **विशिष्ट स्वर और उनकी मात्राएँ** - ह्रस्व **ऋ** = ृ - क्+ऋ = **कृ**, दीर्घ **ॠ** = ॄ - क्+ॠ = **कॄ**
- **अल्पप्राण व्यञ्जन** - जिन व्यञ्जनों के उच्चारण में श्वास-वायु कम मात्रा में बाहर निकलती है
  क्,ग्,ङ्,च्,ज्,ञ्,ट्,ड्,ण्,त्,द्,न्,प्,ब्,म्,य्,र्,ल्,व्
- **महाप्राण व्यञ्जन** - ऐसे व्यञ्जन जिनको बोलने में अधिक प्रयत्न करना पड़ता है और बोलते समय मुख से अधिक वायु निकलती है। ख्, घ्, छ्, झ्, ठ्, ढ्, थ्, ध्, फ्, भ्, श्, ष्, स्, ह्
- **आदेश** - किसी वर्ण को हटाकर जब कोई दूसरा वर्ण शत्रु की भांति उसके स्थान पर आ बैठता है। (शत्रुवदादेश:)
- **आगम** - किसी वर्ण के साथ जब दूसरा वर्ण मित्र की भांति पास आकर बैठकर उससे संयुक्त हो जाता है। (मित्रवदागम:)
- **स्वर या अच् सन्धि** दो स्वरों के मेल से स्वर में परिवर्तन होने के कारण इन्हें स्वर-सन्धि कहते हैं।

1. दीर्घ सन्धि – अक: सवर्णे दीर्घ: - दोनों स्वरों के स्थान पर एक आदेश

अ/आ + अ/आ = **आ** (भय्+अ+अभये= भयाभये)
इ/ई + इ/ई = **ई** (भ्रमत्+इ+इव = भ्रमतीव)
उ/ऊ + उ/ऊ = **ऊ** (तेष्+उ+उपजायते = तेषूपजायते)
ऋ/ॠ + ऋ/ॠ = **ॠ** (पित्+ऋ+ऋणम् = पितॄणम्)

2. गुण सन्धि – आद्गुण: - दोनों स्वरों के स्थान पर एक आदेश

अ/आ + इ/ई = **ए** (विगत्+अ+इच्छा = विगतेच्छा)
अ/आ + उ/ऊ = **ओ** (पुर्+आ+उवाच = पुरोवाच)
अ/आ + ऋ/ॠ = **अर्** (मह्+आ+ऋषीणाम् = महर्षीणाम्)
अ/आ + ऌ = **अल्** (तव्+अ+ऌकार: = तवल्कार:)

3. यण् सन्धि – इको यणचि - प्रथम वर्ण के स्थान पर आदेश

इ/ई + अन्य कोई भी स्वर = **य्** (कर्मण्+इ+एव = कर्मण्येव)
उ/ऊ + अन्य कोई भी स्वर= **व्** (त्+उ+एवाहम् = त्वेवाहम्)
ऋ/ॠ + अन्य कोई भी स्वर= **र्** (जाग्+ऋ+अति = जाग्रति)
ऌ + अन्य कोई भी स्वर = **ल्** (ऌ+आकृति: = लाकृति:)

4. वृद्धि सन्धि – वृद्धिरेचि - दोनों स्वरों के स्थान पर एक आदेश

अ/आ + ए/ऐ = **ऐ** (सहस्+आ+एव = सहसैव)
अ/आ +ओ/औ = **औ** (च् +अ+ओषधी: = चौषधी:)

5. अयादि सन्धि – एचोऽयवायाव:- प्रथम वर्ण के स्थान पर आदेश

ए + कोई भी स्वर = **अय्** (राजर्ष्+ए+अ: = राजर्षय:)
ऐ + कोई भी स्वर = **आय्** (न्+ऐ+अका: = नायका:)
ओ + कोई भी स्वर= **अव्** (मन्+ओ+ए = मनवे)
औ + कोई भी स्वर= **आव्** (द्व्+औ+इमौ =द्वाविमौ)

6. पूर्वरूप सन्धि – एङ: पदान्तादति - दोनों स्वरों के स्थान पर एक आदेश

पदान्त ए + अ = **एऽ** (त्+ए+अभिहिता = तेऽभिहिता)
पदान्त ओ + अ =**ओऽ** (दृष्ट्+ओ+अन्त: = दृष्टोऽन्त:)

Learngeeta.com

योगेशं(म्) सच्चिदानन्दं(वँ), वासुदेवं(वँ) व्रजप्रियम्।
धर्मसंस्थापकं(वँ) वीरं(ङ्), कृष्णं(वँ) वन्दे जगद्गुरुम्॥

© GEETA PARIWAR
गीता परिवार के साहित्य को किसी भी प्रकार से अन्य संस्था अथवा अन्य स्थान पर उपयोग/प्रकाशित करने से पूर्व अनुमति लेना आवश्यक है। अनुमति लेने हेतु पूर्ण प्रयोजन के साथ हमें consent@learngeeta.com पर ईमेल करें।